कार्टूस की रंगीन दुनिया

जिज्ञासा

पंद्रह साल की थकान के बाद सो गया!

विश्व के प्रथम स्थायी अंतरिक्ष स्टेशन मीर का 23 मार्च सन 2001 को भारतीय समय के दिन के 11 बजकर 29 मिनट पर न्यूजीलैंड और चिली के बीच के समुद्र में जलसमाधि के साथ अंत हो गया और इसी के साथ अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र के एक गौरवशाली इतिहास का भी अंत हुआ।

अपने 15 साल के अंतरिक्ष प्रवास में मीर अंतरिक्ष स्टेशन ने मानव कल्याण की दृष्टि से अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए और शायद इसने 'यथा नामो तथा गुणो' लोकोक्ति को भी चरितार्थ कर दिया।

मीर शब्द रूसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है शांति। पिछले कुछ वर्षों से मीर अंतरिक्ष स्टेशन में कई समस्याएँ चल रही थीं तथा इसका प्रचालन मुश्किल पड़ रहा था। मीर अंतरिक्ष स्टेशन में छोटी-मोटी कई दुर्घटनाएँ हुईं, लेकिन जून 1997 में मीर अंतरिक्ष स्टेशन और मालवाहक प्रोग्रेस यान के बीच अंतरिक्ष में हुए टकराव से मीर स्टेशन के ढांचे को काफी क्षति हुई और इसमें कुछ दरारें पड़ जाने से एक मोड्यूल की ऑक्सीजन अंतरिक्ष में रिस गई। बाद में इसकी मरम्मत भी की गई। रेकॉर्डों के अनुसार, अंतरिक्ष में दो मानव निर्मित पिंडों के बीच घटित होनेवाला यह पहला टकराव था। जुलाई 2000 में मीर अंतरिक्ष स्टेशन को नीदरलैंड की एक कंपनी मीर कार्प्स ने लीज पर लिया तथा इसको प्रचलित करने का बीड़ा उठाया। मीर कार्प्स कंपनी में 60 प्रतिशत शेयर आरकेके इनर्जिया कंपनी के थे जिसने मीर अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण किया था तथा जो अब तक इस स्टेशन का प्रचालन कर रही थी। सारे प्रयासों के बावजूद जब रूस ने यह महसूस किया कि अंतरिक्ष स्टेशन मीर काफी बूढ़ा हो गया है तथा उसके तमाम तंत्र काम नहीं करत रहे हैं और उसका प्रचालन काफी महँगा पड़ रहा है, तब रूसी अंतरिक्ष अधिकारियों एवं सरकार ने उसे कक्षा से हटाकर (डी ऑरबिट) पृथ्वी में समुद्र में गिरा देने का निर्णय लिया।

पानी का गिरगिट

कटलफिश को वैसे तो मछली कहते हैं, पर यह मछली प्रजाति में नहीं आती है। दरअसल, यह मोलस्क (घोंघा) प्रजाति की होती है, जिसे सबसे बुद्धिमान प्रजातियों में से एक माना जाता है।

कटलफिश को पानी का गिरगिट भी कहते हैं। यह बहुत चालाक जानवर है, जो आसपास खतरा देखकर बैकग्राउंड के अनुसार सुनहरा, सिल्वर, नीला, हरा इत्यादि कई तरह के रंग बदल सकती है, हालांकि यह रंगों को देख नहीं सकती हैं। कटलफिश इंग्लिश चैनल, अफ्रीका के पश्चिमी किनारे से दक्षिणी सिरे और मैडिट्रेनियन सी में पाई जाती है। कटलफिश की आंखें बाहर की ओर उभरी हुई होती हैं। यह न सिर्फ सामने, बल्कि पीछे भी देख सकती है। इसकी आठ बांहें और दो टैंटेकल्स होते हैं। टैंटेकल्स के बीच चोंच जैसा इसका मुंह होता है। खतरा महसूस होने पर ये भी सक्विड की तरह लिक्विड फेंकती हैं। शिकारियों को कन्फ्यूज करने और डराने के लिए ये इसका इस्तेमाल करती हैं। इससे वहां वातावरण धुंधला हो जाता है और यह बचकर भाग निकलती हैं। शिकार में एक्सपर्ट ये अपने शिकार को हिप्नोटइज करना भी जानती हैं।

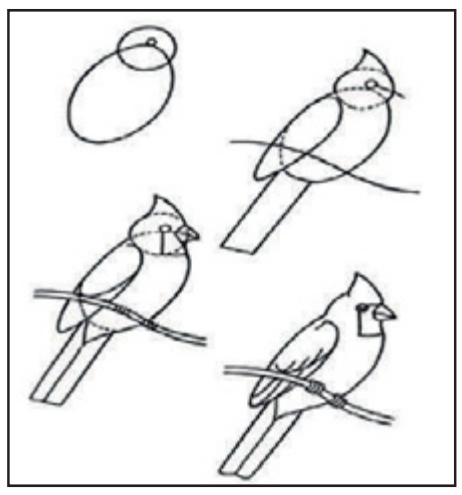

हम बताएं...आप बनाएं

मिकी माउस

दुनिया का सबसे चर्चित कार्टून कैरेक्टर मिकी माउस फालतू कागज पर बना था। जब वाल्ट डिज्नी को काफी जगह भटकने के बाद भी काम नहीं मिला, तो उन्हें चर्च के पादरी ने कुछ कार्टून बनाने का काम दिया। वह जिस शेड के नीचे काम कर रहे थे, वहां चूहे उधम मचा रहे थे। एक चूहा देखकर उनके मन में एक कार्टून बनाने का ख्याल आया और वहीं से मिकी माउस का जन्म हुआ।

मिकी वाल्ट डिज्नी का बनाया हुआ सबसे पहला और सबसे लोकप्रिय कार्टून है। मिकी माउस और उसके दोस्त प्लूटो, जोकि एक कुत्ता है, की मस्ती देखकर कोई भी हंसे बिना नहीं रह सकता। लोगों ने पहली बार 18 नवंबर, 1928 को न्यूयॉर्क सिटी में प्रदर्शित एक फिल्म में मिकी को देखा। मिकी ने मूक सिनेमा में भी काम किया है और बोलती हुई फिल्मों में भी।

डोरेमोन

यह सीरीज एक ऐसे रोबोटिक बिल्ले की है, जो 22वीं सदी से यानी भविष्य से आया हुआ है। इसके पास कई तरह के उपकरण हैं, जिनसे यह नोबिता नोबी की हमेशा मदद करने की कोशिश करता है। डोरेमोन जैसा दोस्त हर बच्चे का सपना है, ताकि उसे भी नोबिता की तरह गैजेट्स मिल जाएं और वह भी अपने सारे काम उसकी मदद से पूरे कर सके।

डोरेमोन प्रसिद्ध जापानी कार्टून है, जिसे क्रियेट किया है फुजिको एफ फुजियो ने। यह सीरीज पहली बार दिसंबर 1969 में एक साथ छह मैगज़िंस में प्रकाशित हुई थी। ओरिजनल सीरीज में 1,344 कहानियां क्रियेट की गई थीं। 45 वॉल्यूम्स में ये कहानियां जापान में टॉयामा में कोकॉका सेंट्रल लाइब्रेरी में रखी हुई हैं।

डॉनल्ड डक

वाल्ट डिज्नी के इस कार्टून कैरेक्टर को पहली बार 9 जून 1934 को पर्दे पर उतरा गया था। 1949 तक डोनल्ड मिकी के साथ दुनिया का सबसे प्रसिद्ध कार्टून कैरेक्टर बन चुका था। अनेक कार्टून स्टोरीज़ के अलावा यह 18 फीचर फिल्मों, 150 से अधिक छोटी कार्टून फिल्मों, 8 टेलीविजन सीरियल्स और 21 वीडियो गेम्स में प्रमुख भूमिका निभा चुका है। सिली सिंफनीज की 'द वाइज लिटिल हेन डॉनल्ड', डोनल्ड की पहली फिल्म थी।

अपनी बेवकूफाना हरकतों और गुस्सैल मिजाज के चलते डॉनल्ड डक जल्द ही दर्शकों में लोकप्रिय हो गया। डॉनल्ड डक, मिकी, मिनी, गूफी और प्लूटो की शैतान फौज के साथ धमाचौकड़ी मचाने में उस्ताद है। यह वास्तव में एक मासूम-सा किरदार है, जो अच्छे काम करना चाहता है, लेकिन हर बार उसका काम बिगड़ जाता है, मगर वह हिम्मत नहीं हारता।

कार्टून सीरियल्स हमेशा से ही बच्चों के पसंदीदा रहे हैं। हर उम्र का बच्चा इन्हें देखना पसंद करता है। सारा दिन एक ही कार्टून देखकर भी बच्चे बोर नहीं होते। समय-समय पर नए-नए कार्टून सीरियल्स बच्चों के दिलों में अपनी जगह बनाते रहे हैं...

टॉम एंड जैरी

पिछले कई सालों से शरारती चूहे और खुराफाती बिल्ले की नोकझोंक बच्चों को लुभा रही है। टॉम का असली नाम थॉमस है, जोकि नीली- स्लेटी आंखों वाला घरेलू बिल्ला है और जैरी भूरे रंग का छोटा-सा चूहा है। यह सीरीज बिल्ले और चूहे के बीच लगातार चलने वाली दुश्मनी पर केंद्रित है।

टॉम हो या जैरी, दोनों एक-दूसरे के पीछे पड़े रहते हैं। प्रत्येक कार्टून फिल्म की कहानी आमतौर पर जैरी को पकड़ने के लिए टॉम के अनगिनत प्रयासों और उसके कारण हुई हाथापाई और दौड़ा-भागी पर आधारित होती है। टॉम एंड जैरी के क्रियेटर हैं जोसेफ और हाना। इनकी जोड़ी ने 17 साल के सफर में टॉम एंड जैरी सीरीज़ के लिए सात ऑस्कर पुरस्कार हासिल किए और कुल 14 बार इन्हें पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया।

स्पाइडरमैन

स्पाइडर मैन (पीटर बेंजामिन पारकर) मार्वल कॉमिक्स का काल्पनिक सुपर हीरो है। इसके रचयिता स्टैन ली और स्टीव डिटको हैं। 15 अगस्त 1962 को स्पाइडरमैन पहली बार दुनिया के सामने पेश किया गया। ली और डिटको ने स्पाइडर मैन की प्रेरणा एक अनाथ बच्चे से ली, जिसे उनके अंकल-आंटी ने पाल पोसकर बड़ा किया था। उन्होंने स्पाइडर मैन को खास ताकत दी, जिसे 'वैब शूटर्स' कहा गया। स्पाइडर मैन वास्तव में पीटर पार्कर हाई स्कूल में पढ़ने वाला एक युवक है, जो जानता है कि विशाल ताकत के साथ ज़िम्मेदारी भी बढ़ जाती है।

बग्स बनी

बग्स बनी, वार्नर ब्रदर्स का प्रसिद्ध कार्टून तथा कॉमिक्स कैरेक्टर है। यह है तो खरगोश, पर इसमें कुछ क्वालिटीज बग्स की भी हैं। यह बेहद शरारती खरगोश है जो अपनी चालाकी से लोगो को छकाता रहता है। बग्स बनी का जन्म ब्रुकलिन, न्यूयॉर्क में 27 जुलाई, 1940 को हुआ था। रॉबर्ट मैकिमसन ने बग्स बनी का कैरेक्टर डिजाइन किया था।

क्या आप जानते हो

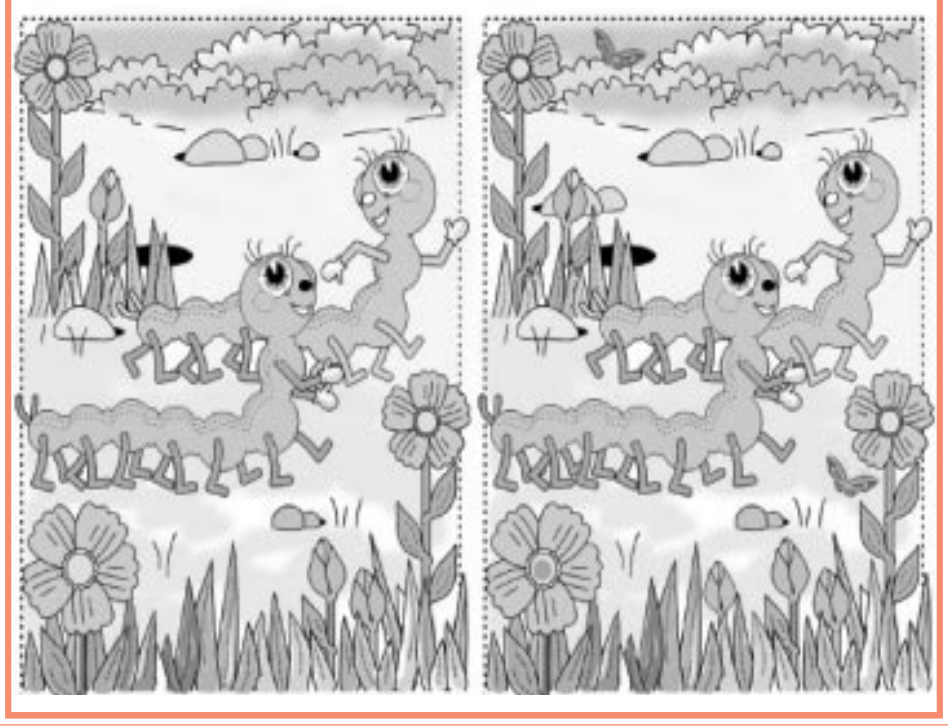

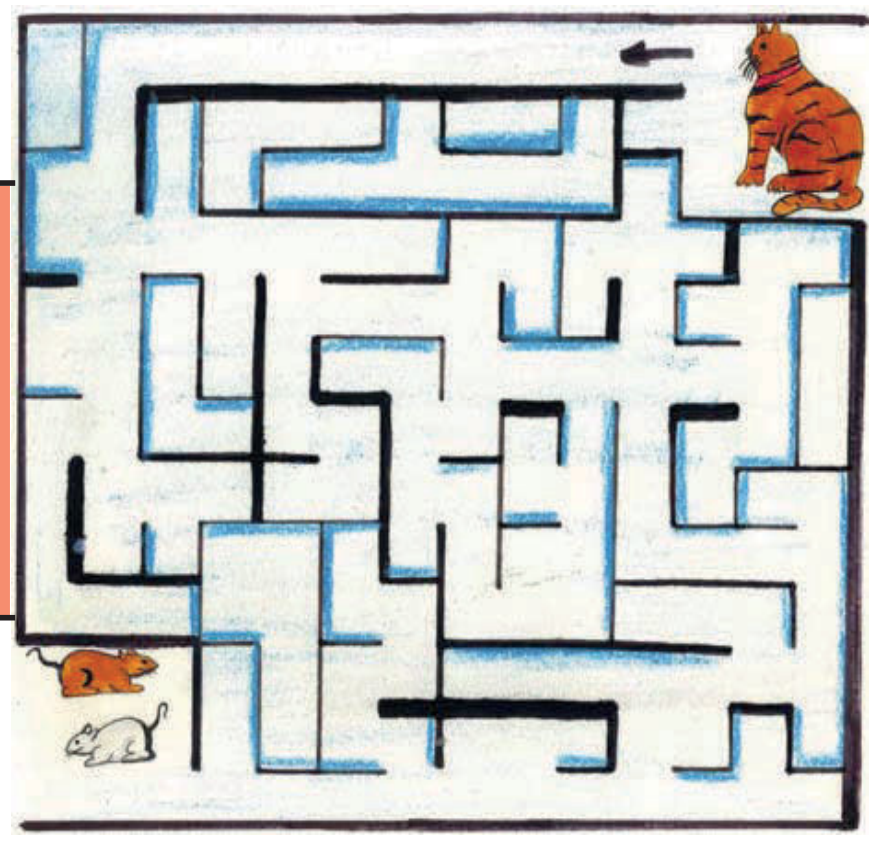

- दुनिया में चीनी का वार्षिक उत्पादन 13.4 मीट्रिक टन होता है जब कि नमक का 21 करोड़ टन, यानी चीनी से डेढ़ गुना ज़्यादा।

- मधुमक्खी के एक छत्ते में 20,000 से 80,000 तक मधुमक्खियाँ हो सकती हैं।
- नील नदी की लंबाई (650 कि.मी.) पृथ्वी की त्रिज्या (6400 कि.मी.) से भी अधिक है। अभी नए अनुसंधानों से पता लगा है कि आमेजन इससे भी ज्यादा लंबी नदी है।

- 26 अप्रैल 2008 को जोहानेसबर्ग में खेले गए अफ्रीकन कनफ़ेडरेशन कप फुटबॉल मैच का सबसे सस्ता टिकट 100,000,000 ज़िंबाब्वे डॉलर का था।
- भारतीय मसालों के लोकप्रिय निर्माता और निर्यातक प्रतिष्ठान एम.डी.एच. का पूरा नाम महाशियाँ दी हट्टी है।
- संयुक्त अरब इमारात की जनसंख्या में प्रवासी नागरिकों का प्रतिशत 85 है, जिनमें 40 प्रतिशत लोग भारतीय हैं।

- कर्नाटक के हरिहर नगर स्थित हरिहरेश्वर मंदिर की प्रतिमा आधी विष्णु और आधी शिव के रूप में हैं।
- सत्रहवीं शती में मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब के आक्रमण के बाद वृंदावन में कृष्ण की राधा-रमण नामक केवल यह एक प्रतिमा बची थी।
- मधुमक्खी के कान नहीं होते। इसकी कमी को उसके शक्तिशाली एंटिना स्पर्श से पूरा करते है।

- गौरैया एक ऐसा पक्षी है जो पालतू न होने पर भी मनुष्य के आसपास ही रहना पसंद करता है।
- राजस्थान में सुंधा माता नामक एक ऐसा पर्वत है जहाँ खंडित मूर्तियों को रखना पवित्र माना जाता है।

- बाबर अपने समय की सामान्य रूप से बोली जाने वाली भाषा फ़ारसी में प्रवीण था, पर उसकी मातृभाषा चागताई थी और उसने अपनी आत्मकथा बाबरनामा चागताई में ही लिखी।
- याहू डॉट कॉम का नाम पहले 卐जेरीज गॉइड टू वर्ल्ड वाइड वेब卐 था अप्रैल 1994 में इसे बदल कर याहू डॉट कॉम कर दिया गया।
- आलू की खेती में विश्व में तीसरा स्थान रखने वाला भारत 16वीं शती से पहले इसके विषय में जानता तक नहीं था।

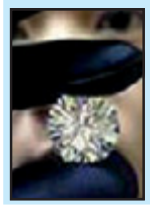

- भारत का सबसे बड़ा हीरा ग्रेट मुग़ल जब 1650 में गोल कुंडा की खान से निकला तो इसका वजन 787 कैरेट था।

अंतर बताओ

रास्ता ढूंढो

मराठी लोककथा: नेकी का फल

एक पेड़ पर एक बंदरिया रहती थी। वह बड़ी नेक और उदार थी। पेड़ के पास एक कुटया थी। वहीं एक बुढ़िया रहती थी। वह बुढ़िया बहुत गरीब थी। एक दिन उसके पास चूल्हे के लिए लकड़ी नहीं थी, तो वह कागज जलाकर रोटियां बनाने लगी। कागज बार-बार बुझ जाते और बुढ़िया की रोटी कच्ची ही रह जाती। पेड़ पर बैठी बंदरिया यह देख रही थी। वह भागकर टाल पर गई और कुछ लकड़ियां उठा लाई। उसने लकड़ियां बुढ़िया को दे दीं। जब बुढ़िया की रोटियां खूब फूलने लगीं, तो बंदरिया रोटियों के चारों तरफ नाचने लगी। बूढ़ी ने पूछा - 'ए बंदरिया, तू मेरी रोटी पर क्यों नाच रही है?' बंदरिया बोली - 'ए दैया, मैं टाल पे गई, टाल पे से लकड़ी लाई, लकड़ी मैंने तुझको दी, तूने उसकी रोटी बनाई, अब तू मुझे रोटी नहीं देगी?' बूढ़ी ने बंदरिया को हंसकर दो रोटी दे दी। रोटी लेकर बंदरिया आगे चल पड़ी। आगे उसे एक कुम्हार मिला। उसका बच्चा रोटी के लिए रो रहा था मगर कुम्हार का एक भी मटका नहीं बिका था, तो रोटी कहां से आतीं? बंदरिया ने कुम्हार से बच्चे के रोने का कारण पूछा और उसे दो रोटियां दे दीं। अब बंदरिया कुम्हार के मटके पर नाचने लगी। कुम्हार ने पूछा, 'ऐ बंदरिया, तू मेरे मटके पर क्यों नाच रही है?'

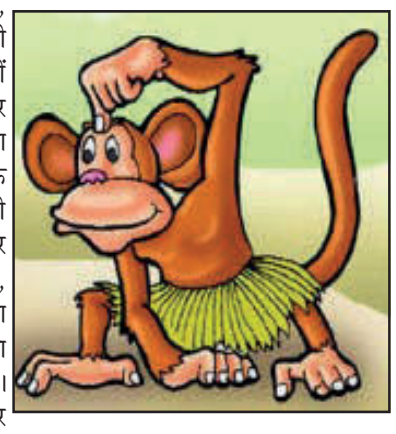

बंदरिया बोली, 'ए दैया, मैं टाल पे गई, टाल पे से लकड़ी लाई, लकड़ी मैंने बूढ़ी को दी, बूढ़ी ने उसकी रोटी बनाई, रोटी मैंने तुझे दी, अब तू मुझे एक मटका नहीं देगा?' कुम्हार ने हंसकर बंदरिया को एक मटका दे दिया। मटका लेकर वह आगे चल पड़ी। आगे एक दूधवाला सिर पर हाथ टिकाए बैठा था। उसकी भैंसें पास खड़ी थीं। बंदरिया ने उसकी उदासी का कारण पूछा, तो वह बोला, 'क्या बताऊं, मैं भैंसों को तो ले आया हूं मगर दूध निकालने का बर्तन तो घर पर ही भूल आया हूं। अब कैसे दूध निकालूं और कैसे बेचूं?'

बंदरिया बोली, 'बस इतनी सी बात। लो मेरा मटका ले लो।' दूधवाले ने खुशी से मटका ले लिया। वह अभी दूध निकाल ही रहा था कि बंदरिया उसकी भैंस पर नाचने लगी। दूधवाला बोला, 'ए बंदरिया, तू मेरी भैंस पर क्यों नाच रही है रे?' बंदरिया बोली, 'ए दैया, मैं टाल पे गई, टाल पे से लकड़ी लाई, लकड़ी मैंने बूढ़ी को दी, बूढ़ी ने उसकी रोटी बनाई, रोटी मैंने कुम्हार को दी, कुम्हार ने मुझको मटका दिया, मटका मैंने तुझको दिया, तू मुझे अपनी भैंस न देगा।' दूध वाला सोच में पड़ गया। बंदरिया बोली, 'नहीं तो मेरा मटका वापस कर।' दूधवाले ने उसे एक भैंस की रस्सी थमा दी। बंदरिया भैंस पर बैठकर आगे चल पड़ी। आगे उसे एक ब्राह्मण का परिवार मिला। उसके बहुत बच्चे थे और वे दूध के लिए रो रहे थे। बंदरिया ने उसे अपनी भैंस दे दी। दूध पीकर बच्चे चुप हो गए। अब बंदरिया बच्चों के चारों ओर नाचने लगी।

ब्राह्मण बोला, 'ए बंदरिया, मेरे बच्चों पे क्यों नाच रही है?' बंदरिया बोली, 'ए दैया, मैं टाल पे गई, टाल पे से लकड़ी लाई, लकड़ी मैंने बूढ़ी को दी, बूढ़ी ने उसकी रोटी बनाई, रोटी मैंने कुम्हार को दी, कुम्हार ने मुझको मटका दिया, मटका मैंने दूधवाले को दिया, उसने मुझे अपनी भैंस दी, भैंस मैंने तुझको दी, अब तू मुझे अपना बच्चा दे दे।' ब्राह्मण वैसे ही अपनी गरीबी से परेशान था, उसने अपने सबसे छोटे बच्चे को उसे दे दिया। बच्चे को कंधे पर लिए बंदरिया चलते-चलते राजा के बगीचे में पहुंची। वहां राजा-रानी चिंता में डूबे हुए बैठे थे। बंदरिया ने उनसे चिंता का कारण पूछा, तो वे बोले, 'हमारी कोई संतान नहीं है। इसलिए हम दुखी हैं।' 'अरे, इसमें दुखी होने वाली क्या बात है? मेरे पास एक बच्चा है। तुम इसे रख लो।' रानी ने बच्चा ले लिया। अब बंदरिया एक आम के पेड़ के चारों ओर नाचने लगी। राजा ने पूछा, 'ए बंदरिया, तू मेरे पेड़ पे क्यों नाच रही है रे?' बंदरिया बोली, 'ए दैया, मैं टाल पे गई, टाल पे से लकड़ी लाई, लकड़ी मैंने बूढ़ी को दी, बूढ़ी ने उसकी रोटी बनाई, रोटी मैंने कुम्हार को दी, कुम्हार ने मुझको मटका दिया, मटका मैंने दूधवाले को दिया, उसने मुझे अपनी भैंस दी, भैंस मैंने ब्राह्मण को दी, उसने मुझे अपना बच्चा दिया, बच्चा मैंने तुझको दिया, अब ये पेड़ मेरा होगा, बोल?'

राजा ने हंसकर कहा, 'तुम एक नेक और अच्छी बंदरिया हो। आज से ये सारा बगीचा तुम्हारा है। खूब खाओ-पिओ और मौज करो।' और बंदरिया राजा के बगीचे में ठाठ से रहने लगी।